जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

19 दिसंबर 2023

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया में "विकसित भारत @2047: वॉय्स ऑफ़ यूथ" के तहत सीएसएसईआईपी द्वारा "शेयरिंग योर विज़न फॉर इंडिया इन 2047" विषय पर ऑनलाइन चर्चा का आयोजन

सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ सोशल एक्सक्लूजन एंड इनक्लूसिव पॉलिसी (सीएसएसईआईपी), जामिया मिल्लिया इस्लामिया ने 18 दिसंबर 2023 को "विकसित भारत @2047" वॉयस ऑफ यूथ" के तत्वावधान में "शेयरिंग योर विज़न फॉर इंडिया इन 2047" विषय पर एक ऑनलाइन चर्चा का आयोजन किया। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 11 दिसंबर 2023 को "विकसित भारत @2047: वॉयस ऑफ यूथ" कार्यक्रम लॉन्च किया। यह कार्यक्रम अपनी स्वतंत्रता के 100वें वर्ष को चिह्नित करते हुए 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र में बदलने के मूल दृष्टिकोण के साथ शुरू किया गया है।

जामिया के सामाजिक विज्ञान संकाय के डीन प्रोफेसर मो. मुस्लिम खान ने सत्र की अध्यक्षता करके इस अवसर की शोभा बढ़ाई। इस सत्र की सह-अध्यक्षता सीएसएसईआईपी जामिया की मानद निदेशक प्रो. तनुजा ने की। प्रारंभ में उन्होंने अध्यक्ष और वहां उपस्थित सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया।

सीएसएसईआईपी के सहायक प्रोफेसर डॉ. अरविंद कुमार ने सत्र का संचालन किया। इस चर्चा में केंद्र के विद्यार्थियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। सीएसएसईआईपी के सहायक प्रोफेसर, संकाय सदस्य डॉ. मुजीबुर रहमान ने भारत में विश्व स्तरीय विश्वविद्यालयों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए अपने विचार साझा किए। चूंकि भारत में विश्व स्तरीय विश्वविद्यालयों का अभाव है, इसलिए बड़े पैमाने पर भारतीय विदेशी विश्वविद्यालयों में पढ़ाना पसंद करते हैं। हालाँकि यह एक चिंताजनक संकेत है लेकिन साथ ही यह भारत की क्षमता को भी दर्शाता है।

सीएसएसईआईपी के अतिथि संकाय डॉ. मसरूर ने इस तथ्य पर ध्यान केंद्रित करते हुए भारत के समग्र विकास पर जोर दिया कि भारत की 70% आबादी बुनियादी सुविधाओं के बिना गांवों में रहती है। ग्रामीण क्षेत्रों के विकास पर ध्यान दिए बिना भारत का विकास नहीं किया जा सकता। ढांचागत विकास का मतलब केवल शहरों का विकास करना नहीं है। जब भारत में लोग भूख से मर रहे हों तो भारत समग्र विकास नहीं कर सकता। केंद्र के कई छात्रों जैसे- जसीमुल फरहान (पीएचडी स्कॉलर), इलैया कुमार (पीएचडी स्कॉलर), इफ्फत खातून (एमए थर्ड सेमेस्टर), हैदर अली (एमए थर्ड सेमेस्टर) ने 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए अपना दृष्टिकोण साझा किया। हाशिये पर मौजूद वर्गों की समावेशिता पर जोर देकर भारत को एक वैश्विक शक्ति बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया है। भारत के विकास लक्ष्यों में हाशिये पर रहने वाले समुदायों को शामिल करने की आवश्यकता है। भारत अभी भी सांप्रदायिकता और जातिगत अत्याचार जैसे कई मुद्दों से जूझ रहा है, इसलिए सभी को साथ लिए बिना विकास हासिल नहीं किया जा सकता है। भारत को एक वैश्विक गंतव्य बनाने के लिए,

प्रतिनिधि राजनीति, प्रवासी श्रमिकों के लिए आत्मनिर्भरता और भारत की अपनी संस्कृति का जश्न मनाना एक विकसित राष्ट्र के लक्ष्य को प्राप्त करने के साधन हो सकते हैं।

सामाजिक विज्ञान संकाय के डीन प्रोफेसर मुस्लिम खान ने भारत सरकार द्वारा शुरू की गई मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया, स्किल इंडिया जैसी कुछ पहलों पर ध्यान केंद्रित करके समावेशी नीति के महत्व पर प्रकाश डाला। उच्च शिक्षा और अच्छी नौकरी एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। युवाओं को उच्च शिक्षा अवश्य प्राप्त करनी चाहिए। युवा शक्ति का उपयोग करना होगा| जातीय विद्वेष और जातीय घृणा दूर होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि अगर सरकार दृढ़ संकल्पित हो तो सांप्रदायिक दंगों, आदिवासी हिंसा, जातीय अत्याचारों को रोका जा सकता है और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व हासिल किया जा सकता है। उन्होंने 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने के लिए कुछ मंत्र दिए।

प्रोफेसर तनुजा ने आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय स्थिरता जैसे विकास के विभिन्न आयामों को शामिल करके सतत विकास की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने छात्रों को कौशल भारत कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया।

सीएसएसईआईपी, जामिया के सहायक प्रोफेसर डॉ. बदरेअफशां द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ सत्र का समापन हुआ।

जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया